वसंत जमशेदपुरी

राजा का कुत्ता

राजा का कुत्ता बिमार है,
खबर छपी अखबार में।
भूखा मँगरू सोच रहा है,
रखा न कुछ संसार में।।

खट-खट कर है मरता कोई।
नित्य तिजोरी भरता कोई।
स्वेद बहाकर पानी सा नित-
साहब जी से डरता कोई।

वारे-न्यारे बस उनके हैं,
जो बैठे सरकार में।।

गली-गली गुंडों का पहरा।
देश, धर्म पर संकट गहरा।
अपनी-अपनी हाँक रहे सब,
हर असली पर नकली चेहरा।

नेह, देह से हुआ सभी को,
कौन फँसे अब प्यार में।।

पोल दीखती बहुत ढोल में।
झूठे सारे लोग बोल में।
नेता हों अथवा अभिनेता,
दक्ष सभी हैं तोल-मोल में।

भीड़ खचाखच मदिरालय में,
सन्नाटे बाजार में।।

गीत

पीड़ा का शृंगार

आज तुम्हारी पीड़ाओं पर,
मैं अपने उद्गार लिखूँगा।
और तुम्हारे श्रम से ही है,
धरती शृंगार लिखूँगा।।

सूरज की तपती किरणों में,
स्वेद-कणों से है वह आकुल।
नहीं छाँव का काम तनिक भी,
लथपथ-लथपथ आकुल-व्याकुल।
लगातार चल रही हथौड़ी-
छेनी की ठनकार लिखूँगा।।

आक्रोशित मुख मंडल उसका,
श्याम देह, चौड़ा सीना है।
माँड़-भात खाकर निकला है,
अब दिन भर पानी पीना है।
साँझ ढले मिलने वाले जो-
रुपयों की चमकार लिखूँगा।।

शाम हुई तब रुकी हथौड़ी,
छेनी ने विश्राम किया फिर।
मैली बाँहों से मुख पोंछा,
पल भर को आराम किया फिर।
कलरव करते, नीड़ लौटते,
खगकुल की चहकार लिखूँगा।।